https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 01, No 03, SEP 2025 PP 23-28 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
Devi– The Contribution of Pottery to the Globalization of Indian Art

THE CONTRIBUTION OF POTTERY TO THE GLOBALIZATION OF INDIAN ART (**भारतीय कला के वैश्वीकरण में मृण्मूर्ति कला का योगदान**)

Poonam Devi[a]* **Dr. Jaishankar Mishra**[b]

[a] *Research Scholar, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya University Chitrakoot, Satna, Madhya Pradesh*

[b] *Research Scholar, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya University Chitrakoot, Satna, Madhya Pradesh*

[a]*Email: pm5106099@gmail.com*

Abstract

Pierce art has been evolving since time immemorial, embodying the stories of all past eras. This art is a unique confluence of folk culture and folk art. In some places, this terracotta art has flourished as the local folk art, and its uniqueness gives that region a distinct identity not only to the entire nation but to the entire world. Speaking of terracotta art, it is not limited to traditional folk art themes and styles, religious rituals, everyday letters, and religious idols. In today's era, terracotta art has achieved a new dimension. It has adapted to the needs of the present era and has also embraced many new themes. This art is no longer confined to regional or local boundaries, but is developing as a unique form of Indian art, with a new identity across the globe. Today, the entire world is drawn to India's vast culture and traditions, as India is the only nation that continues to keep its diverse cultural heritage alive at every step. Each state of India has its own distinct art, tradition, costume, language, and so on. The spirit of unity within the diversity of these arts is raising the flag of Indianness on the global stage. Today, Indian culture is being adopted even abroad, be it in artistic form or religious and cultural aspects. Most notably, Indian art and culture are a pure tradition based on nature, awakening human sentiments towards nature conservation. Our terracotta art is a revolution in nature conservation, taking steps towards its protection and promotion. Representing Indian art and culture, terracotta art has the honor of showcasing India's art heritage and civilization to the entire world. Therefore, this art and the traditional artists who create this art form should be provided with incentives and government benefits, so that they can further encourage and nurture India's art heritage.

मृण्मूर्ति कला अनादिकाल से अपने अंदर सभी बीते कालक्रमों की कहानी को संजोकर के काल दर काल विकसित होती चली आ रही है, यह कला लोक संस्कृति एवं लोककला का अनोखा संगम है| कुछ स्थानों में यह मृण्मूर्ति कला उस स्थान की लोककला के रूप में पुष्पित-पल्लवित होती रही है, और अपनी विशेषता से उस क्षेत्र को संपूर्ण राष्ट्र ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के सामने एक अलग ही पहचान दिलाती है| मृण्मूर्ति कला की बात करें तो यह कला सिर्फ लोक कला की ही पारंपरिक विषयों एवं शैलियों, धार्मिक अनुष्ठानों एवं रोजमर्रा में उपयोगी पत्रों एवं धार्मिक मूर्तियों तक ही सीमित नहीं है| आज के वर्तमान युग में मृण्मूर्ति कला ने एक नवीन आयाम प्राप्त किया है, वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुरूप इस कला ने अपने आप को ढाल लिया है, एवं अनेक नवीन विषयों को भी अपना लिया है| यह कला अब क्षेत्रीय या किसी विशेष स्थान मात्र की सीमा रेखा में बंध कर नहीं अपितु इससे अलग पूरे विश्व में नवीन पहचान के साथ भारतीय कला के रूप में विकासशीलता को प्राप्त कर रही है| आज के समय में संपूर्ण विश्व भारत की विशाल संस्कृति एवं परंपराओं की ओर आकर्षित हो रहा है क्योंकि भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जो कदम-कदम में अपनी अलग-अलग सांस्कृतिक धरोहर को आज भी जीवंत करके चली आ रही है| भारत के प्रत्येक राज्य की एक अलग कला, परंपरा, वेशभूषा, भाषा इत्यादि है, भारत की इन कलाओं की अनेकता में भी एकता की भावना विश्व पटल में भारतीयता का परचम लहरा रही है| आज विदेशों में भी भारतीय संस्कृति को अपनाया जा रहा है, वह चाहे कला का रूप हो या धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप| सबसे अलग बात तो यह है कि भारतीय कला एवं संस्कृति प्रकृति पर आधारित एक विशुद्ध परंपरा है, जो प्रकृति संरक्षण के प्रति मानवीय भावनाओं को जागृत करने का काम करती है| हमारी मृण्मूर्ति काला प्रकृति संरक्षण के प्रति एक क्रांति है

जो प्रकृति संरक्षण एवं संवर्धन की ओर कदम बढ़ाती है। भारतीय कला एवं संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली मृण्मूर्ति कला भारत की कला विरासत एवं भारतीय सभ्यता को संपूर्ण विश्व के सामने प्रदर्शित करने का गौरव प्राप्त करती है अतः इस कला को एवं इस कला स्वरूप को सृजित करने वाले पारंपरिक कलाकारों को प्रोत्साहन एवं सरकारी लाभ प्रदान किया जाए, जिससे वह और अधिक उत्साह के साथ भारत की इस कला धरोहर को पुष्पित-पल्लवित कर सकें।

Keywords: Indian, Art, Globalization, terracotta, Contribution

भारतीय, कला, वैश्वीकरण, मृणमूर्ति, योगदान

⁎ Corresponding author.

प्रस्तावना

कला मानव जीवन में केवल लालित्य भाव ही उत्पन्न नहीं करती वरन अपने द्वारा मानव जीवन के उद्देश्य को भी प्रकट करती है। कला का सृजन तभी संभव है जब मानव की आत्मा उसे कला सृजन की प्रेरणा प्रदान करती है। कला का सृजन हम किसी भी दबाव में आकर नहीं कर सकते, इसीलिए कई विद्वानों ने कहा है कला एक कलाकार के मन एवं आत्मा को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। अगर हम बात करें तो जब से मानव जीवन का प्रारंभ हुआ है तभी से उसमें कलात्मक भाव भी उत्पन्न हुआ है। आदिमानव द्वारा किए गए गुफा चित्रों के माध्यम से इन तथ्यों पर मोहर लग गई है, इसके पश्चात जैसे-जैसे मानव जीवन या कार्यक्रम में विकास होते गए वैसे-वैसे काल क्रम में मानव की कला भी विकसित होती चली गई। कला का जन्म केवल किसी एक देश तक ही सीमित नहीं था, संपूर्ण विश्व में उसका जन्म हुआ और लगातार हर काल क्रम में वह उन्नति की ओर अग्रसर रही। कला केवल आनंद का भाव ही नहीं उत्पन्न करती उसके साथ में वह किसी भी देश, धर्म एवं उसकी संस्कृति को भी संभालकर काल कालांतर तक के लिए रखती है। अगर हम भारत की कला की बात करें तो वह संपूर्ण विश्व में किसी भी देश की कला एवं संस्कृति से सर्वथा श्रेष्ठ रही है। भारत में जितनी विधाएं, विविधताएं हैं वह चाहे कला के क्षेत्र में हो धर्म, संस्कृति, बोली, जलवायु हर क्षेत्र में ऐसा प्रतीत होता है की संपूर्ण विश्व की झांकी हमारे भारत में देखने को मिलती है।

मृण्मूर्ति कला भारत की सबसे प्राचीनतम कलाओं में से एक है इस कला रूप के माध्यम से हमें पता चलता है कि हमारी सभ्यता और संस्कृति कितनी विशाल और समृद्धिशाली रही है पाषाण काल में चाक के आविष्कार के साथ ही इस कला स्वरूप का जन्म माना जाता है। इसके पश्चात आद्यऐतिहासिक काल में सिंधुघाटी सभ्यता में इस कला का स्वरूप अपने यौवनावस्था में था, इस काल में दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं के साथ-साथ धार्मिक, व्यावसायिक आदि क्रियाकलापों में मिट्टी से बनी वस्तुओं को आग में पकाकर उपयोग में लाई गई, यहां तक की हड़प्पाकालीन बड़ी से बड़ी इमारतों स्नानागार, अन्नागार अन्न भंडार के विशाल पत्रों आदि का निर्माण इसी कला रूप के माध्यम से किया गया। इसके पश्चात अनेक कालों में मृण्मूर्ति कला ने समय के साथ अपनी पकड़ मजबूती के साथ बनाते हुए विकसित होती रही। मौर्य काल, शुंग काल, कुषाण काल, सातवाहन काल आदि कालों में भी मृण्मूर्ति कला ने अपने अस्तित्व को विकसित किया एवं भारतीय आधुनिक काल में भी अपनी गरिमा के साथ भारतीय लोककला एवं संस्कृति को अपने माध्यम से देश-विदेश तक पहुंचा रही है।

भारतवर्ष की कला शताब्दियों से अपनी विविधता,आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गहनता के लिए विश्व विख्यात रही है। संपूर्ण विश्व के मंच पर भारतीय कला संपदा के वैश्वीकरण में कई भारतीय पारंपरिक कलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें मृण्मूर्ति कला एक विशेष स्थान रखती है। मिट्टी के द्वारा निर्मित की जाने वाली यह कला केवल धार्मिक या सजावटी वस्तु नहीं अपितु यह भारतीय कला एवं संस्कृति की आत्मा की मूर्ति अभिव्यक्ति है।

मृण्मूर्ति कला का परिचय- मृण्मूर्ति अर्थात "मिट्टी से निर्मित मूर्ति" एक ऐसी कला परंपरा है जो हड़प्पा सभ्यता से प्रारंभ होकर आज भी भारतवर्ष के विभिन्न भागों में जीवित है, यह कला धार्मिक अनुष्ठानों तीज-त्योहारों, सामाजिक मान्यताओं और लोक साहित्य से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।

मृण्मूर्ति कला की परिभाषा- मिट्टी को कलाकार के द्वारा काटकर, दबाकर, उभारकर मनचाही आकृति प्रदान करने के पश्चात आग में पकाकर प्राप्त की गई कलाकृति मृण्मूर्ति कहलाती है।

मृण्मूर्ति कला के प्रकार- मृण्मूर्ति कला के अनेक स्वरूप हैं-

1. धार्मिक एवं अनुष्ठानिक मूर्तियां।
2. दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुएं।
3. खिलौने।
4. सजावटी वस्तुएं इत्यादि।

भारत में मृण्मूर्ति कला निर्माण के लिए प्रसिद्ध प्रमुख क्षेत्र

भारत में मृण्मूर्ति निर्माण के लिए कई स्थान विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जैसे- उत्तर प्रदेश में गोरखपुर, छत्तीसगढ़ में बस्तर, नगरनार, पश्चिम बंगाल का बांकुरा, तमिलनाडु, उड़ीसा, राजस्थान का मोलेला गांव आदि स्थान।

उद्देश्य

1. भारतीय कला के वैश्वीकरण में मृण्मूर्ति कला के योगदान का अध्ययन करना।

2. भारतीय मृण्मूर्ति कला के माध्यम से प्रकृति संरक्षण के योगदान का अध्ययन करना।
3. भारतीय कला एवं संस्कृति के वैश्विक प्रभाव का अध्ययन करना।

साहित्य का पुनरावलोकन

किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने से पूर्व उसे विषय से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना परम आवश्यक है।

1. कुमार, जितेंद्र (2017) ने अपने शोध ग्रंथ "टैराकोटा में कार्य करने वाले समकालीन मूर्तिशिल्पियों का समीक्षात्मक अध्ययन" में वर्तमान में भारतीय समकालीन टैराकोटा मूर्ति शिल्प के विकास की नई दिशा व गति के महत्व को समझाया है।
2. त्रिपाठी, अनुराधा (2012) ने अपने शोध प्रबंध में "गोरखपुर एवं वाराणसी के मृण्मय कला में निहित आलंकारिक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन" में इनकी भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए यहां सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्वरूप का भी अध्ययन किया है।
3. डॉ०,जयशंकर मिश्र ने अपनी पुस्तक सेरेमिक आर्ट (2004) में मृण्मूर्ति कला के आधुनिक एवं व्यवसायिक पक्ष की उपयोगिता को बहुत ही सरलता से समझाया है।

भारतीय कला के वैश्वीकरण में मृण्मूर्ति कला का योगदान

भारतीय कला शताब्दियों से अपनी अनेकता, अगाधता, पारलौकिकता के लिए संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध रही है। इसमें चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्यकला, संगीत कला, वास्तुकला और हस्तशिल्प कला की अनेक प्रकार की शैलियां शामिल हैं, इन्हीं कला रूपों में एक विशिष्ट स्थान मृण्मूर्ति कला का है। यह कला पुरानतम भारतीय कलाओं में से एक है, जिसकी मूल (जड़े) हड़प्पा सभ्यता तक फैली हुई हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में मृण्मूर्ति कला ने भारत की कला-संस्कृति के एक संदेशवाहक के रूप में विश्व व्यापी स्तर पर अपना अलग परिचय स्थापित किया है।

भारतीय कला संस्कृति की वाहक- मृण्मूर्ति कला भारत की साम्यिक (सामाजिक), धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व को प्रदर्शित करती है, विश्व के समक्ष यह कला भारतीय सांस्कृतिक वैविध्य और लोक जनजीवन की झांकी प्रस्तुत करती है।

आर्थिक एवं व्यवसायिक योगदान- दस्तकारी मेलो, वैश्विक कला प्रदर्शनियों और इंटरनेट प्लेटफार्म के द्वारा भारत के मृण्मूर्ति कलाकार आज संपूर्ण विश्व में अपनी मृण्मूर्ति कला उत्पादो का विक्रय कर रहे हैं, इसके माध्यम से भारतीय ग्रामीण कलाकार आर्थिक एवं व्यवसायिक रूप से सशक्त हो रहे हैं।

वैश्विक प्रदर्शनियाँ और संग्रहालय- लंदन, न्यूयॉर्क, अमेरिका आदि देशों की कला संग्रहालयों में भारतीय मृण्मूर्ति कला का प्रदर्शन हुआ है, इससे भारतीय पारंपरिक कला को विश्व स्तर पर पहचान मिली है।

शिक्षण एवं शोध- विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में अब भारतीय मृण्मूर्ति कला पर अनुसंधान हो रहे है, इसके माध्यम से विद्वतापूर्ण स्तर पर मृण्मूर्ति कला की उपादेयता बढ़ रही है।

मृण्मूर्ति कला न सिर्फ भारतीय संस्कृति की थाती है, अपितु यह कला विश्व स्तर पर भारतीय कला एवं संस्कृति के शक्तिशाली होने का नेतृत्व करती है इस कला के माध्यम से भारतीय लोक परंपराओं धार्मिक निष्ठा ग्रामीण जनजीवन शैली एवं प्राकृतिक संतुलन का प्रेषण संपूर्ण विश्व भर में प्रेषित किया जा रहा है।

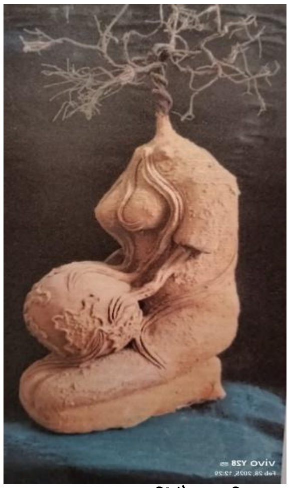

मृण्मूर्ति कला के माध्यम से प्रकृति संरक्षण में योगदान

मृण्मूर्ति कला भारतीय कला संस्कृति की संरक्षक होने के साथ-साथ प्रकृति संरक्षण के प्रति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इस कला के माध्यम से मूर्तियां, खिलौने, पत्रों तथा अन्य सजावटी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है इन कलाकृतियों में प्लास्टिक एवं अन्य रासायनिक हानिकारक तत्वों के स्थान पर मिट्टी, जल एवं प्राकृतिक रंगों आदि का उपयोग होता है। इससे पर्यावरण को हानि नहीं पहुंच पाती। यह कलाकृतियां प्लास्टर ऑफ पेरिस की भांति जल स्रोतों को दूषित नहीं करती यह अविघटनीय होती हैं। इन कलाकृतियों के निर्माण में स्थानीय गोबर, मिट्टी, धान की भूसी आदि पूर्णतया प्राकृतिक सामग्री का प्रयोग होता है, जिससे स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र पर कम दबाव पड़ता है। सामाजिक एवं धार्मिक उत्सवों पर मिट्टी के द्वारा निर्मित मूर्तियां प्रयोग की जाने लगी हैं जो जल में आसानी से घुल जाती है और जल प्रदूषण नहीं फैलाती। यह कला टिकाऊ और प्रकृति के प्रति अनुकूल है जो वर्तमान की स्थिति के अनुसार विश्व स्तर पर जरूरी है।

मृण्मूर्ति कलाकार अपनी कलाकृतियों के माध्यम से प्रकृति संरक्षण, वन्य जीव संरक्षण, जलवायु परिवर्तन आदि जैसे विषयों पर कलाकृतियां कलाकृतियों का निर्माण करके जनमानस में प्रकृति के संरक्षण के प्रति चेतना का संचार कर रहे हैं।

मृण्मूर्ति कला प्राकृतिक तत्वों से जन्म लेती है और प्रकृति में बिना हानि पहुंचाय विलीन हो जाती है।

भारतीय कला एवं संस्कृति का वैश्विक प्रभाव

भारतवर्ष की कला एवं संस्कृति प्राचीन एवं महान समृद्ध परंपराओं में से एक है इसकी मूल (आधार) हजारों वर्षों पुरानी सभ्यता में निहित है, उदाहरण- सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक सभ्यता, मौर्य काल, गुप्त काल, शुंग काल, कुषाण काल आदि। वर्तमान समय में वैश्वीकरण के दौर में भारतीय कला संस्कृति की पहुंचना केवल एशिया तक है, अपितु यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, आदि महाद्वीपों तक है।

मृण्मूर्ति कला, वरली चित्रकला, मधुबनी चित्रकला, राजस्थानी चित्रकला, गोंड चित्रकला जैसी पारंपरिक भारतीय कलाएं विदेशों में प्रदर्शित हो रही हैं। अनेकों अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालयों में भारतीय मूर्तिकला, चित्रकला, एवं स्थापत्य कला के प्रतिरूप (नमूने) प्रदर्शित किए गए हैं। भारतीय शास्त्रीय नृत्य कत्थक आदि विदेशों में सीखे जा रहे हैं। योग, संगीत जैसे- तबला बांसुरी आदि विश्व भर में लोकप्रिय हैं। भारतीय पौराणिक एवं धार्मिक कथा-कहानियों पर आधारित नाटकों को विदेशी मंचों पर प्रस्तुत किया जा रहा है। योग, आयुर्वेदिक चिकित्सा आज विश्व स्तर पर स्वस्थ जीवन शैली पद्धति है। अगर भाषा की बात करें तो संस्कृत भाषा को सबसे वैज्ञानिक भाषा माना जाता है, और उसे विदेशों में कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है। अगर धर्म की बात करें तो बौद्ध धर्म जो भारत में ही उत्पन्न हुआ आज विश्व के कई देशों चीन, जापान, कोरिया, श्रीलंका देशों आदि में अपनाया जा रहा है, यहां तक की भारतीय तीज-त्योहार भी अब अनेक देशों में अपनाया जाने लगा हैं। भारतीय संस्कृति एवं भारतीय कला की महानता, विविधता और परलौकिकता ने विश्व स्तर पर लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है।

(भारतीय कला एवं संस्कृति एक ऐसी ज्योतिपुंज है जो संपूर्ण विश्व को प्रकाशित कर रही है।)

मृण्मूर्ति में कार्य करने वाले कुछ आधुनिक कलाकार

1. के०जी० सुब्रह्मण्यम- सुब्रह्मण्यम भारतीय आधुनिक कला के क्षेत्र में एक बहुआयामी और नवीन विषयों में कार्य करने वाले कलाकार थे। वे केवल एक महान चित्रकार नहीं थे बल्कि एक मूर्तिकार, चित्रकार, भित्ति चित्रकार, छापा कलाकार और लेखक भी थे। उन्होंने भारत की लोक परंपरागत मिथिकीय कहानियों और आधुनिकतावादी नजरिया को मिलाकर एक महान अद्वितीय कला शैली को विकसित किया। उनके मृण्मूर्ति कलाकृतियां अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली हैं।
2. योगदान- के०जी० सुब्रमण्यम ने बंगाल, केरल, और गुजरात की परंपरागत मृण्मूर्ति कला को आधुनिक कला रूप में प्रस्तुत किया। इन्होंने भारत की ग्रामीण लोक कथाओं और पौराणिक पात्रों एवं दैनिक जिंदगी को अपनी मृण्मूर्ति कलाकृतियों में चित्रित किया। इन्होंने कई मृण्य मूर्ति कलाकृतियां भित्ती-मूर्ति शैली में सृजित की है, जिनको भित्तियों पर सजाया जा सकता है। इनकी मृण्मूर्ति कला कृतियों के विषय लोक देवी- देवता श्रृंखला, मिथिकीय कहानियां, नारी स्वरूप को ताकतवर रूप में प्रतीकात्मक सृजन किया है। इनकी मृण्मूर्ति कलाकृतियों ने भारतीय पारंपरिक मूर्ति शिल्प को वैश्विक मंच पर नवीन परिचय दिलाया है।
3. हिम्मत शाह- हिम्मत शाह भारतीय कला के एक ख्यातिलब्ध और प्रायोगिक कलाकार हैं, इन्होंने मुख्य रूप से मृण्मूर्ति कला में बहुचर्चित महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिम्मत शाह उन कलाकारों में से एक है जिन्होंने माटी को एक कलात्मक और भाव अभिव्यक्ति पूर्ण माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित किया है, और भारत की मृण्मूर्ति कला को एक नवीन सौंदर्य दृष्टि प्रदान की है। इनकी कलाकृतियों के विषय- मानव सिर, मिट्टी की दरारें, आधुनिक आदिमता, भित्ति- मृण्मूर्ति कला कृतियां आदि।
4. सतीश गुजराल- सतीश गुजराल भारत के सुप्रसिद्ध कलाकारों में से एक हैं। इन्होंने बहु आयामो में कार्य किया है, इन्होंने चित्रकला, भवन निर्माण कला, छाप कला, म्यूरल, भित्ति चित्रकला एवं मृण्मूर्ति कला में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान किया है। इन्होंने अपने जीवन के अनुभव, पीड़ा, संघर्ष और भारत- पाकिस्तान विभाजन के समय के अनुभवों को अपनी कलाकृतियों में बहुत ही भावात्मक और प्रतीकात्मक स्वरूप से प्रस्तुत किया है। इनकी मृण्मूर्ति कला आधुनिक भारत की मृण्मूर्ति कला परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इनकी मृण्मूर्ति कलाकृतियों के विषय- मानव पीड़ा, समाज और राजनीति, धार्मिक प्रतीक नारी आकृतियां आदि।

मृण्मूर्ति कला में कार्य कर रहे कुछ समकालीन कलाकार

भारत में अनेकों समकालीन मृणमूर्ति कलाकार है जो इस कला परंपरा के कला स्वरूप को जीवित और समकालीन रूप में प्रस्तुत करते रहे हैं। यह कलाकार न केवल परंपरागत मृण्मूर्ति कला को संरक्षित कर रहे हैं बल्कि इस कला रूप को नए प्रयोगों एवं आधुनिक दृष्टिकोण के साथ आगे प्रसारित कर रहे हैं

रामकुमारी- राम कुमारी ने परंपरागत मृण्मूर्ति कला में नवीन चेतन फूंक दी है। उनके द्वारा निर्मित की गई मृण्मूर्ति कला भारतीय संस्कृति और धार्मिक प्रतीकों से अभिप्रेरित है। उनकी कलाकृतियों में मिट्टी की प्रकृति और भावनाओं की गहरी समझ दृष्टिगत होती है।

विनोद बिहारी महतो- विनोद बिहारी महतो को भारतीय मृण्मूर्ति कला में विशेष योगदान के लिए जाना जाता है इन्होंने भारतीय परंपरागत मृण्मूर्ति कला कृतियों में अनेकों प्रयोग किए हैं, जो उनकी कला को बहुत विशेष बनती है।

चंद्रशेखर सिंह- यह एक सुप्रसिद्ध मृण्मूर्ति कलाकार हैं। उनकी मृण्मूर्ति कलाकृतियां भारत की ग्रामीण जनजीवन एवं सांस्कृतिक परंपराओं से प्रभावित हैं। वह आधुनिक दृष्टिकोण से मृण्मूर्ति कला को प्रस्तुत करते हैं।

मुकुल नायक- मुकुल नायक ने मृण्मूर्ति कला के माध्यम के द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त कठिनाइयों और विभिन्न दृष्टिकोण को दर्शाया है इनकी मृण्य मूर्ति कलाकृतियों में भारतीय संस्कृति की विशाल समृद्ध धरोहर और परंपरागत कला की अलौकिक सुंदरता दिखाई पड़ती हैं।

नरेंद्र कुमार शर्मा- कलाकार नरेंद्र कुमार शर्मा की मृण्मूर्ति कलाकृतियां ग्रामीण लोक कला एवं शहरीय कला के बीच एक सेतु बंधन स्थापित करने का प्रयास करती हैं। वह मृण्मूर्ति कला को नगरीय संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं, जिससे यह कला स्वरूप और अधिक सामाजिक बन जाती हैं।

अरविंद शाह- अरविंद शाह का कला कार्य भारत की मृण्मूर्ति कला में अभिव्यक्ति और स्वरूप का एक शानदार मेल है। इनकी मृण्मूर्ति कलाकृतियां भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक घटनाओं से प्रेरित होती हैं।

संतोष शर्मा- संतोष शर्मा ने भारतीय मृणमूर्ति कला को नवीन दिशा प्रदान की है, और आधुनिक प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए परंपरागत मृण्मूर्ति शिल्प में सुधार किए हैं इनकी मृण्मूर्ति कलाकृतियां गहरी प्रतिको और संदेशों के साथ निर्मित हैं।

इन कलाकारों के कला कार्य भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक और जीवन की गहरी समझ को अभिव्यक्त करती हैं साथ ही परंपरागत कला रूप को नए स्वरूप में प्रस्तुत करती हैं।

मृण्मूर्ति कला के वैश्वीकरण में समस्या

1. मृण्मूर्ति कला के वैश्वीकरण में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
2. नवीन तकनीकी एवं नवीन विषयों की कमी।
3. मृण्मूर्ति कला के प्रचार-प्रसार में संकीर्णता।
4. भाषीय संवाद में बाधा।
5. शासकीय सहायता की कमी।
6. सांस्कृतिक अनुवाद में कठिनाई आदि समस्याएं।

डॉ० जयशंकर मिश्र ने भी अपनी पुस्तक सैरामिक आर्ट में लिखा है- "परंपरागत उपयोग के पात्रों के साथ हमें भवन निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सजावटी टाइल्स व म्यूरल का निर्माण करना चाहिए। आज टैराकोटा टाइल्स व म्यूरल व पैनल आदि का प्रयोग भवन निर्माण में फैशन सा हो रहा है"।

समाधान

1. परंपरागत कलाकारों को नवीन तकनीकी एवं विषयों की जानकारी प्रदान करना चाहिए।
2. इंटरनेट के माध्यम से डिजिटल मार्केटिंग, सोशल मीडिया अभियान और ऑनलाइन प्रदर्शनी प्लेटफार्म को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
3. विश्व स्तरीय कला प्रदर्शनियों एवं कला मेलों में भारतीय प्रतिनिधियों को भेजना चाहिए।
4. पारंपरिक कलाकारों को बेसिक अंग्रेजी एवं ग्राहक संवाद के लिए कार्यशालाओं के माध्यम से जानकारी एवं प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए।
5. सरकारी योजनाओं के द्वारा मृण्मूर्ति कलाकारों के लिए सब्सिडी,पेंशन योजनाएं, एवं कार्यशाला सहायता देनी चाहिए एवं सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना चाहिए।
6. सांस्कृतिक अनुवाद की कठिनाई को दूर करने के लिए मूर्तियों के साथ फत् कोड या पुस्तिकाओं को जोड़ा जाए जो दर्शकों को उनकी सांस्कृतिक कहानियों से परिचित करा सके।
7. आर्ट गैलरियों एवं ऑनलाइन (इंटरनेट) प्लेटफार्म पर बहुभाषीय विवरण उपलब्ध करवाना चाहिए।

"आज का युग जहां कंप्यूटरीकृत हो रहा है, वहां कलाकार को भी समय के साथ बदलना होगा,"।(डॉ० शकुंतला महावर)

मृण्मूर्ति कला को संवर्धन एवं संरक्षण प्रदान करने वाली कुछ सरकारी संस्थाएं

भारत में मृण्मूर्ति कला के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए आनेको शासकीय संस्थाएं निरंतर रूप से कार्य कर रही हैं। यह सरकारी संस्थाएं कलाकारों को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता कला प्रदर्शन के अनेक अवसर, अनुसंधान, विकास और विपणन बाजार उपलब्ध कराने जैसे कार्य में सहायता करती है। जैसे-

ललित कला अकादमी-ललित कला अकादमी भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण संस्था है जो ललित कलाओं एवं दृश्य कलाओं जैसे चित्रकला, मूर्तिकला, छापाकला, मृण्मूर्ति कला आदि कलाओं के विकास एवं बचाव एवं प्रोत्साहन में प्रमुख रूप से भूमिका निभाती है। ललित कला अकादमी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कला प्रदर्शनियां आयोजित की जाती हैं, जिसमें मृण्मूर्ति कलाकारों को भाग लेने का मंच प्रदान किया जाता है। ग्रामीण एवं परंपरागत मूर्ति कलाकारों की कलाकृतियां भी प्रदर्शित की जाती हैं। अकादमी द्वारा भारत के अनेकों स्थानों पर मृण्मूर्ति पर आधारित कला शिविर का आयोजन किया जाता है, इन कला शिवरों में पारंपरिक शिल्पकारों और समकालीन मूर्तिकारों को तकनीकी सहयोग एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। अकादमी द्वारा पारंपरिक लोक कलाकारों को कला की मुख्य धारा के प्रवाह में लाने का प्रयास करती है, एवं उनके कार्यों को अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रस्तुत करती है। मृण्मूर्ति कला में शोध एवं नवाचार निर्माण हेतु कलाकारों को आर्थिक अनुदान दिए जाते हैं।

इसी प्रकार भारत में और भी सरकारी संस्थाएं हैं जो इस क्षेत्र में निरंतर प्रयासरत हैं। जैसे- हस्तशिल्प विकास आयुक्त कार्यालय, खादी और ग्रामउद्योग आयोग, राष्ट्रीय हस्तशिल्प और हथकरघा संग्रहालय, क्षेत्रीय डिजाइन और तकनीकी विकास केंद्र, भारतीय शिल्प परिषद, राज्य हस्तशिल्प बोर्ड आदि संस्थाएं हैं जो कलाकारों को प्रशिक्षण, डिजाइन विकास, ऋण सुविधा, कच्चे माल को उपलब्ध कराना, स्थानीय उद्योग को बढ़ावा देना, विपणन में सहायता प्रदान करना आदि सहायता प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

मृण्मूर्ति कला भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का बहुमूल्य भाग है जो इस समय विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान एवं उपस्थिति दर्ज करा रही है। यह मृण्मूर्ति कला न सिर्फ भारतीय आध्यात्मिकता और पर्यावरणीय जागरूकता को अभिव्यक्त करती है, अपितु अंतरराष्ट्रीय कला प्रेमियों के लिए भारतीयता का परिचय भी बन रही है। उचित संरक्षण, प्रोत्साहन और विपणन के द्वारा यह कला भारतवर्ष के सांस्कृतिक वैश्वीकरण की दूरी बना सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्र, जयशंकर, 2023, मूर्तिकला निर्माण एवं तकनीकी, I ALIGN पब्लिकेशन।
2. मिश्र, जयशंकर, 'भदेंद्र', मिथिला की लोक कला शैली (2023)।
3. एम०के० धवलीकर, मास्टर पीसेज ऑफ इंडियन टेराकोटाज, मुंबई, (1977)।
4. डॉ०, मिश्र, जयशंकर, सैरामिक आर्ट ,(2004)।
5. डॉ०, मिश्र, जयशंकर,सैरामिक आर्ट ,2004, पृष्ठ संख्या- 13, 65।
6. डॉ०,महावीर, शकुंतला, वैश्वीकरण के परिदृश्य में कला, कलाकार और चुनौतियां, international journal of education, modern management, April& June (2021)
7. प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, (2012)।
8. कुमार, जितेंद्र, टैराकोटा में कार्य करने वाले समकालीन मूर्ति शिल्पियों का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, (2017)।
9. त्रिपाठी, अनुराधा, गोरखपुर एवं वाराणसी के मरण में कला में निहित अलंकारिक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर पृष्ठ संख्या-4,(2012)।
10. एम०के० धवलीकर,मास्टर पीस ऑफ इंडियन टैराकोटाज, मुंबई, (1977)।
11. Sharma. V.K., Jitendra Kumar, P-L- Mishra- DR- Sheo Prasad Singh, Terracotta catalogue of Mathura museum, Government museum Mathura, 2000